www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आजीविका के स्त्रोत देहातों में खोजें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आजीविका के स्रोत देहात में खोजें

शिक्षा और आजीविका में से कौन प्रमुख कौन गौण है इसका निर्णय कठिन है। ज्ञान के बिना निर्वाह साधन कैसे जुटें ? और निर्वाह न मिले तो ज्ञान-सम्पदा की बात कैसे सूझे ? दोनों ही तथ्य अपने अपने स्थान पर सही हैं। उन्हें परस्पर पूरक अन्योन्याश्रित कहा जा सकता है। मुर्गीसे अण्डा होता है या अण्डे से मुर्गी ? बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है या वृक्ष से बीज ? इस विवाद का समाधान कठिन है। एक दूसरे से साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए रहकर ही समाधान मिल सकता है। शिक्षा और आजीविका को भी इसी प्रकार परस्पर सुसम्बद्ध समझा जा सकता है। दोनों में से एक की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। एक को छोड़ देने से दूसरे की उपलब्धि सम्भव है न प्रगति।

शिक्षा सम्वर्द्धन के लिए हर किसी को विचार करना चाहिए और उसके लिए भरसक प्रयत्न करना चाहिए, साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि निर्वाह के लिए आजीविका अर्जन में व्यतिरेक न पड़े।

इसके लिए कई प्रश्न सामने आते हैं। जिनमें प्रथम तो योग्यता बढ़ाने और अधिक श्रमशील बनने की बात सामने आती है। आलसी प्रमादी लोग किस प्रकार उपयुक्त आजीविका कमा सकेंगे ? पिछड़ी मनोभूमि और हेय स्व भाव अभ्यास वाले लोग जब गम्भीरतापूर्वक इस समाधान के लिए कारगर उपाय नहीं सोचेंगे तो उनके छप्पर पर सोने की वर्षा कहां आती है। धन-दौलत के खजाने किसके खेत आंगनमें गढ़े हुए है, जिन्हें उखाड़कर मौज मजे के दिन गुजारे जायें और गुलछर्रे उड़ाये जायें ? लॉटरी, जुआ, सट्टा के सपने भी शेखचिल्ली की तरह मनमोदक ही बने रहते हैं। चोर-उचक्के भी काठ की हाँडी में बहुत दिन खिचड़ी नहीं पका पाते। बचकाने चिन्तन और उथले प्रयत्नों से अर्थ क्षेत्र में जादुई सफलता किसे मिली है ? किसी को राई-रत्ती मिली होगी, तो वह धूप-छाँव जैसी आँख-मिचौनी का खेल, मटकते-मचलते छोड़कर अपने घर चली गयी होगी। काम तो काम के रास्ते बनता है। बात

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो बात के ढंग से बनती है। योग्यता की अभिवृद्धि और श्रम-सलग्न रहने की तत्परता ही उपयुक्त उपार्जन के काम आती है।

अपव्ययी, दुर्व्यसनी, ठाठ-बाट वाले रंगीले लोग शान बनाते और शेखी बघारते फिरते हैं। पर उस सूखी हंसी से बनता क्या है। आजीविका न हो तो फिजूलखर्ची की रंगीली पतङ्गबाजी कितनी देर काम आती है। श्रमपूर्वक उपार्जन और एक एक पाई का सदुपयोग करने वाली दूरदर्शिता ही, सम्पन्नता को जन्म देती है। इस राजमार्गको छोड़कर जो झाड़ियों वाली पगडण्डियों पर कदम बढ़ाते हैं, वे उस चतुरता में घाटा ही उठाते हैं। हथेली पर सरसों कहाँ जमती है। इसके लिए किसान जैसी कर्मठता अपनानी पड़ती है। आजीविका की स्थिर और समुचित व्यवस्था के लिए मनुष्य को बुद्धि-मत्ता प्रतिभा और तत्परता का समन्वय--सुनियोजन करना पड़ता है। इसके बिना सन्तोष और सम्मान प्रदान करने वाली स्थिर आजीविका की व्यवस्था बनती ही नहीं। इन सत्प्रवृत्तियों के अपनाने में जो जितनी तत्परतापूर्वक संलग्न हैं, उन्हें आर्थिक क्षेत्र की तंगी से छुटकारा पाने का अवसर उसी अनुपात में मिलता है। रावण जैसी तृष्णा को अपनाने का प्रसंग दूसरा है। हिरण्याक्षों से लेकर सिकन्दरों जैसे प्रतिभाओं को वैभव की महत्वाकाक्षाँ पूरी करने का अवसर न मिला, तो सामान्यजनों की बात ही क्या है। सामान्यों में भी वे, जो योग्यता, श्रमशीलता एवं मितव्ययता की उपेक्षा करते हैं, इतने पर भी धन कुबेर बनने की सोचते हैं, उन्हें मनुष्य के रूप में एक जीता जागता आश्चर्य ही कहा जा सकता है। आश्चर्य तो आश्चर्य है। कौतुक-कौतुहल से विनोद मनोरंजन हो सकता है, पर उस आधार पर समस्याओं के समाधान कहाँ निकलते हैं ?

जिनने अपना दृष्टिकोण सही कर लिया है और औसत भारतीय स्तर के औचित्य के साथ जोड़ लिया है उनके सामनेही इस सन्दर्भ के कुछ ठोस प्रश्न आते हैं। स्थिर समाधान प्राप्त करने के लिए उन्हें ही सुनिश्चित समाधान खोजने पड़ते हैं। ऐसे लोगों को औचित्य को ध्यान में रखना होता है और--उपयुक्त का ही अवलम्बन लेना पड़ता है। उन्हें सोचना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चाहिए कि आजीविका उपार्जन के लिए क्या माध्यम अपनाये जाँय ।

सर्व विदित अर्थसाधनों में कृषि एवं पशु-पालन, परम्परागत व्यवसाय हैं । कृषिमें उद्यान भी आता है । पशु-पालनमें उनके उत्पादनों का व्यवसायभी जोड़ा जा सकता है । चिरकाल से भारतीयों की प्रमुख आजीविका स्रोत यही रहा है । जिनके पास जमीन है । सिंचाई के साधन हैं, इन्हें इधर-उधर न भटक कर उसी को समुन्नत बनाने पर ध्यान देना चाहिए । अगले दिनों कृषि मजदूरों की कमी पड़ेगी । इसलिए यह कार्य अपने परिवार के छोटे-बड़े लोगों को श्रमशील बनाकर ही सम्पन्न किया जाना चाहिए । वस्त्र उद्योग भी ऐसा ही है, जिसमें समूचे परिवार के श्रमरत रहने पर ही उपयुक्त तारतम्य बैठता है । मालिक हुकुम चलायें और मजदूर कमा-कमाकर खिलायें इस दृष्टि से न खेती सफल हो सकती है, न बागवानी और न वस्त्र निर्माण कार्यमें सफलता मिल सकती है । श्रम संकट अब दिन-प्रतिदिन गहरा होगा । इसलिए नहीं कि सभी को रोजगार मिल गया । और किसी को श्रम उपार्जन की आवश्यकता नहीं रही । वरन इसलिए कि हर व्यक्ति हलके काम चाहता है, मेहनत से जी चुराता है और अधिकाधिक पाने के लिए कुचक्र रचने में ही माथा खपाता रहता है । ऐसे मजदूरों की कमाई पर किसी को गुजारा चलाने की इच्छा हो, तो उसे निराश रहना और घाटा उठाना पड़ेगा ।

लाखों, करोड़ों की लागतसे खड़े होने वाले बड़े कारखानों और बड़े व्यवसायों की बात दूसरी है । सामान्य स्तर के लोगों के लिए यही उचित है कि या तो वे अपने परिवार को श्रमजीवी बनायें या फिर कई छोटे परिवारों को मिलाकर एक बड़ा संयुक्त परिवार बनायें । पिछले दिनों उपरोक्त उद्योगों के आधार पर आजीविका उपार्जित करने वाले प्रायः बड़े ही परिवार बनाये रहते थे । उसी में उनकी स्थिरता और प्रगति रहती थी । बिखर जाने पर छोटे गृहस्थों को अधिक सुविधा और स्वच्छता भले ही मिलती हो, पर उस परिवारकी संयुक्त जन शक्ति एवं अर्थशक्ति की सम्भावना में जो लाभ मिलते थे उनसे वंचित रहने पर प्रकारान्तरसे सभीको घाटा सहना पड़ता था । पिछले दिनों यह प्रक्रिया भावनात्मक आधार पर चलती रही है । अब सहकारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिद्धान्तों के अनुसार अधिकार और कर्त्तव्य निर्धारित करने वाली आचार संहिता नये सिरे से बनाई जा सकती है।

सरकारी नौकरी अपवाद ही मानी जा सकती है। बढ़ती हुई जन-संख्या को—शिक्षा विस्तार को ध्यान में रखने पर कोई तथ्यों से आँख मूंदने वाला ही यह सोच सकता है कि उच्च शिक्षा दिलाकर बच्चों को अफसर बनाने में मजा आयेगा। इस दिवास्वप्न से जितनी जल्दी मुँह मोड़ा जा सके, उतना ही अच्छा है। कुछ विशिष्ट प्रतिभाओं को छोड़कर औसत स्तर के परिवारों को नई पीढ़ी के लिए आजीविका के ऐसे स्रोत तलाश करने चाहिए, जिनमें सुविधा और निश्चिन्तता देने का ही समावेश हो।

इस दृष्टि से जीवनोपयोगी वस्तुओं का उत्पादन और व्यवसाय यह दो ही काम शेष रहते हैं। दोनों में से उत्पादन पर अधिक ध्यान देना चाहिए क्योंकि अनेकों के उत्पादन को एक विक्रेता ही खपा सकता है। उत्पादन कार्यों में लगातार श्रम मिलता है, जबकि विक्रय के लिए ग्राहक की प्रतीक्षा में बैठे रहना पड़ता है।

बड़े कारखाने विदेशों के निर्यात से अमीरों की शौकीनी के लिए प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं के कारखाने भी लगा सकते और उसके लिये बड़ी पूँजी की व्यवस्था भी जिस-तिस प्रकार कर सकते हैं। उनकी खपत के लिए भी समर्थ एजेन्सी की आवश्यकता पड़ती है। इतना बड़ा जंजाल बुनना सर्व साधारण के बलबूते की बात नहीं है। मध्यवर्त्ती लोगों को ऐसे कुटीर उद्योगों की बात सोचनी चाहिए जिनका उत्पादन समीपवर्त्ती लोगों में खप सके। इस दृष्टि से बुनकर दर्जी, रंगरेज, धोबी, मोची, कुम्हार, बढ़ई, राज, मिस्त्री जैसे उद्योगों को नये सिरे से सुव्यवस्थित रूप में खड़े करने की आवश्यकता है—सहकारिता के आधार पर इनके कुछ बड़े कारखाने बन सकते हैं। उनमें बिजली से चलने वाली छोटी-छोटी मशीनों का प्रयोग हो सकता है। मात्र हाथ का श्रम उतनी आजीविका नहीं दे पाता, जिससे बढ़ी हुई मंहगाई के अनुरूप खर्चा निकल सके। अगले दिनों श्रमिक मजदूरों का भी वेतन बढ़ेगा, वे आज जितने सस्ते नहीं मिलेंगे। ऐसी दशा में लागत बढ़ने पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ग्राहक को उचित मूल्य पर वस्तुयें तभी मिल सकती हैं जब उत्पादनतन्त्र को अधिक सुविकसित और सुव्यवस्थित बनाया जाय। इसके लिए मध्यवर्त्ती छोटे कारखानों, कुटीर उद्योगों की बात ही सोचनी चाहिए। साथ ही यह तथ्य भी ध्यान में रखना चाहिए कि कच्चा माल जुटाने, बने माल के बेचने के लिए उत्पादक को ही भागदौड़ न करनी पड़े। पूँजी लगाने से लेकर विक्रय करने और आवश्यकतानुसार स्टोर भी जमा करने की जिम्मेदारी सहकारी समितियों को उठानी चाहिए। कुटीर-उद्योग सहकारी समितियों के द्वारा ही चल और पनप सकते हैं। जो स्वयं ही बनाने के साथ बेचेगा भी, उसे वर्तमान परिस्थितियों में उत्साह वर्द्धक सफलता न मिल सकेगी।

विक्रय क्षेत्र में इन दिनों अप्रामाणिकता का समावेश तेजी से बढ़ रहा है। कम तोल, कम नाप, असलीके नाम पर नकली, मिलावट, कीमतों में धोखाधड़ी, मुनाफाखोरी जैसी अनेक दुष्प्रवृत्तियाँ व्यवसाय क्षेत्रमें घुस पड़ी हैं। फलतः उपभोक्ता की जेब ही नहीं कटती, वरन अनिश्चिता और असमंजसकी तरह जगह जगह भटकना पड़ता है। इस कठिनाईको दूर करनेके लिए प्रामाणिक विक्रय तन्त्र खड़े हो सकें, तो जहाँ ग्राहकों के लिए निश्चिन्तता रहेगी और वहीं विक्रेता भी अपना सम्मान और लाभांश फिर स्थिर रख सकेगा। ऐसी प्रामाणिक दुकानों की आज हर जगह जरूरत है। वे पुराने बड़े सेठों से सर्वसाधारण को बहुत राहत दे सकती हैं। ऐसी दुकानें सहकारी या निजी रूप में खुलने लगेंगी तो उनका व्यवसाय टिका भी रहेगा और निर्वाह में भी कभी न पड़ने देगा।

फेरी व्यवसाय अब शिथिल होता जा रहा है, जब कि पिछड़े और देहातों में बसे हुये भारत में उसकी महती आवश्यकता है। वहाँ लोग स्टोर नहीं करते। रोज कुँआ खोदते रोज पानी पीते हैं। ऐसी दशा में उनकी खरीद भी छोटी और थोड़ी होती है। इस प्रयोजन की पूर्ति फेरी वाले ही कर सकते हैं। सिर पर पीठ पर न सही, साइकिलों, ठकेल, गाड़ियों के द्वारा यह काम अभी भी किया जा सकता है। सप्ताहमें एक या दो दिन हाट लगाने का अभी भी बहुत जगह प्रचलन है। इसे सुनियोजित ढंग से फिर आरम्भ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किया जा सके, तो इस माध्यम से कितनों को ही काम मिल सकता है और सर्वसाधारण की सुविधा का एक नया द्वारा खुल सकता है।

शहर से गांवों को गाँवों से शहरों को माल ढोने के लिये पशु-वाहनों का नये सिरे से नया सिलसिला चल सकता है। गधे, खच्चर, बैल, ऊँट, बैलगाड़ियों के पुराने साधन ही इन क्षेत्रों की आवश्यकतायें पूरी कर सकते हैं जहाँ पक्की सड़कें अभी तक नहीं पहुँची हैं। पेट्रोल, डीजल, की इन दिनों तंगी पड़ रही है। इन्हें दूसरे अधिक महत्वपूर्ण कार्यों के लिए सुरक्षित रख-कर देहाती क्षेत्रों में पशु-वाहनों का उपयोग चल पड़े तो उनकी वृद्धि से गोबर, खाद तथा गोबर गैस जैसे नए आधार खड़े करने में सहायता मिल सकती है। दूध, घी, मक्खन, छाछ का व्यवसाय बढ़ानेकी अपने देश में बहुत बड़ी गुँजाइश है। गुँजाइश तो मधुमक्खी पालन की भी कम नहीं है। हाट बाजार प्रदर्शनी समीपवर्त्ती क्षेत्रों के लिए और मिलें बड़े क्षेत्रों में व्यावसायिक आदान-प्रदान करनेके लिए बड़े उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

शुद्ध पानी के लिए हैण्ड पम्प, मल मूत्र का लाभदायक उपयोग करने के लिये सस्ते फ्लैश पाखाने हर क्षेत्र में लग सकते हैं। स्वास्थ्य संरक्षण और गन्दगी निराकरण के लिए इन दोनों ही प्रयोगों की इन दिनों इतनी बड़ी आवश्यकता है। इस कार्यको देहाती क्षेत्र का असाधारण एवं अभिनव उद्योग कहा जा सकता है। बढ़ती आबादी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कितने ही नये काम उत्पन्न किए तथा बढ़ाये जा सकते हैं। सस्ते और स्था-नीय सामग्री से बन सकने वाले खिलौनों का अपना अलग ही क्षेत्र है। अब उसे प्लास्टिक उद्योग हड़पता जा रहा है। इसे वापिस लौटाने की आवश्यकता है।

जिस प्रकार सरकारी नौकरियों से शिक्षा को विरत करने की आव-श्यकता है, उसी प्रकार आजीविका के लिए शहरों की ओर भागने की प्रवृत्ति रोकी जानी चाहिए। शहरी आबादी बढ़ने के अनेकानेक खतरे और दूरगामी दुष्परिणाम हैं। अपने देश में आजीविका स्रोत अब ग्रामों की ओर बढ़ने चाहिये। गाँवों की संरचना, परम्परा एवं स्थिति सुधारी जानी चाहिये और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्थिति ऐसी बननी चाहिए जिससे शहरों की तुलना में ग्रामीण जीवन में चमक दमक न रहते हुए भी अधिक सौम्य सरल, सस्ता और सुखद बन सके। यदि उद्योगों को प्रधानता देनी हो, तो फिर कस्बों को उस प्रयोजन के लिए विकसित किया जा सकता है और निवास के लिए—कृषि, पशु पालन, गृह-उद्योगों के लिए गाँवों को उपयुक्त स्तर का बनाया जा सकता है लोग शहरों की ओर न भागें, गाँवों में ही रहें। इसके लिए ग्राम-विकास की अनेकानेक योजनाओं को हाथ में लिया जा सकता है। निवास के लिए घरों का निर्माण स्थानीय साधनों से सम्भव हो सके इसलिए थोड़ा प्रयत्न करने और सूझ-बूझसे काम लेने पर ऐसी व्यवस्था बन सकती है कि कोठियों में काम आने वाले साधनों को खरीदने के लिये ग्रामीणों को विवश न होना पड़े और इस तनिक सी आवश्यकता के लिये शहरों के लिये न भागना पड़े।

यूगोस्लाविया जैसे देशों ने अपनी ग्राम प्रधान जनसंख्या को अनेकानेक सुविधाओं से सुसम्पन्न किया है, फलतः वहाँ गाँव से शहर की ओर भागने की प्रवृत्ति नहीं रही, वरन शहरों से लोग गाँवों की ओर लौट रहे हैं। वही हमें भी करना चाहिए। देहाती जीवन के प्रति जन-जन के मन में सम्मान उत्पन्न करना चाहिए और मध्यवर्ती निर्वाह करने के लिए कठोर परिश्रम करने की आदत डालनी चाहिए।

पन चक्की, झरनों के छोटे बिजलीघर, हलके ट्रैक्टर छोटे स्तर के ऐसे उपकरणों का विकास होना चाहिये, जिनके लिए बड़ी पूँजी और उच्च-स्तरीय तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता न पड़े इन कार्यों को सरकार कर सके, तो ठीक अन्यथा हर काम के लिए उसी पर निर्भर रहने की आदत छोड़नी चाहिये और अपने बिखरे साधनों को ही समेट कर सहकारिता के आधार पर ऐसी व्यवस्थायें बनानी चाहिये, जिनके आधार पर देहातों की प्रगति तथा आजीविका उपार्जन की नई प्रक्रिया हस्तगत हो सके। इसके लिये थोड़ी-सी सूझ-बूझ और तत्परता जुटाने भर की देर है। ✱

क्र०२१-प्र० युग निर्माण योजना, मु० युग निर्माण प्रेस, मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org